आग पड़ो तिन तेज बल को, आग पड़ो रूप रंग।
धिक धिक पड़ो तिन ग्यान को, जिन पाया नहीं प्रसंग।। ८ ।।

मेरी शक्ति को, बल को, रूप को, रंग को आग लगे। मेरे ज्ञान को धिक्कार है। इन्होंने ऐसे सुन्दर अवसर को पहचाना नहीं।

धिक धिक पड़ो मेरी पांचो इंद्री, धिक धिक पड़ो मेरी देह।
श्री स्याम सुन्दरवर छोड़ के, संसार सों कियो सनेह।। ९ ।।

मेरी पांचों इन्द्रियों को और तन को धिक्कार है कि धाम धनी को छोड़कर इन्होंने संसार से प्यार किया।

धिक धिक पड़ो मेरे सब अंगों, जो न आए धनी के काम।
बिना पेहेचाने डारे उलटे, ना पाए धनी श्री धाम।। १० ।।

मेरे सब अंगों को धिक्कार है जो धनी के काम नहीं आए। इन्होंने धनी की पहचान न करके उलटे माया में डाला। जिससे मुझे धाम धनी नहीं मिल सके।

तुम तुमारे गुन ना छोड़े, मैं बोहोत करी दुष्टाई।
मैं तो करम किए अति नीचे, पर तुम राखी मूल सगाई।। ११ ।।

हे धनी ! तुमने तो कृपा करनी नहीं छोड़ी। मैंने तो बहुत दुष्टता की है। मैंने तो कर्म भी नीच किए। फिर भी आप मूल सम्बन्ध को जानकर कृपा करते रहे।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५४४ ।।

वारने जाऊं बनराए वल्लभ की, जाकी सुख सीतल छाया।
देखो ए बन गुन भव औखदी, देखे दूर जाए माया।। १ ।।

मैं उस वृक्ष पर बलिहारी जाती हूं, जिसकी सुखदायी सीतल छाया में हमारे धनी (गांगजी भाई के घर) बैठते थे। साथजी, देखिए इसके नीचे प्राणनाथजी बैठकर भवसागर से पार उतरने की औषदी तारतम वाणी देते थे। जिस वाणी को देखने से (ग्रहण करने से) माया से छुटकारा मिलता है।

जाऊं वारने आंगने बेलूं, जित ले बैठो संझा समे साथ।
बातें होत चलने धाम की, घर पैंड़ा देखाया प्राणनाथ।। २ ।।

गांगजी भाई के आंगन की रेती पर बलिहारी जाती हूं जहां सायंकाल सुन्दरसाथ के साथ हमारे धनी बैठते थे और परमधाम चलने की बातें सुनाते थे तथा घर का रास्ता हमारे प्राणनाथ (धनी देवचन्द्रजी) बतलाते थे।

भी बल जाऊं आंगने, आगे पीछे सब साज।
जहां बैठो उठो पांउ धरो, धनी मेरे श्री राज।। ३ ।।

आंगन के सब सामान पर भी बलिहारी जाती हूं जहां मेरे धनी श्री राजजी महाराज बैठते, उठते, पांव रखते थे।

बलिहारी जाऊं बोहोत बेर, देहरी मंदिर द्वार।
वारने जाऊं इन जिमी के, जहां बसत मेरे आधार।। ४ ।।

मैं बार-बार घर की देहरी, दरवाजे पर बलिहारी जाती हूं और उस जमीन पर भी, जहां मेरे प्रीतम रहते थे।

Nijanand App

बलि जाऊं पाटी पलंग सिराने, चादर सिरख तलाई।
पौढ़त पिउजी ओढ़त पिछौरी, ऊपर चंद्रवा चटकाई।।५।।

मैं बलिहारी जाती हूं उस पलंग पर, निवार पर, तकियों पर, चादर पर, रजाई पर, गद्दे पर जहां मेरे धनीजी पौढ़ते थे और चादर ओढ़ते थे और ऊपर चन्द्रवा लगा हुआ रहता था।

बल बल जाऊं मैं दुलीचा चाकला, बल जाऊं मन्दिर के थंभ।
जिन थंभों कर धनी अपने, जुगतें दिए बंध।।६।।

मैं उस दुलीचा पर, आसन पर, मन्दिर के थंभों पर बलिहारी जाती हूं जिन थंभों को उन्होंने अपने हाथ से बांधा था।

बैठत हो जित महाबलिया, बल बल जाऊं ठौर तिन।
साथ सबेरा आए के बैठत, करो धाम धनी बरनन।।७।।

हे मेरे सर्वशक्तिमान धनी ! जहां आप बैठते थे, उस ठिकाने पर बलिहारी जाती हूं। जहां प्रातः आकर सुन्दरसाथ के बीच बैठकर धाम का वर्णन करते थे।

देखत मन्दिर में कई बिध, वस्त सकल पूरन।
टूक टूक कर वार डारों, मेरे जीव के और तन।।८।।

घर में सभी वस्तुओं, जो कई तरह की हैं, को मैं देखती हूं। अपने जीव और तन के टुकड़े-टुकड़े कर इन पर कुर्बान कर दूं।

भले तुम देह धरी मुझ कारन, कर रोसन टाल्यो भरम।
जीव मेरा बोहोत सखत था, मेहेर नजरों भया नरम।।९।।

हे धनी ! आपने बहुत अच्छा किया जो मेरे वास्ते माया में तन धारण किया और तारतम ज्ञान देकर संशय हटाए। मेरा जीव बड़ा कठोर था जो आपकी नजरे करम से नरम हो गया है।

बल जाऊं मैं चरन कमल की, बल जाऊं मीठे मुख।
बलिहारी सोभा सुंदरता, जिन दरसन उपजत सुख।।१०।।

मैं चरण कमलों पर और आपके सुन्दर स्वरूप पर बलिहारी जाती हूं, जिसके दर्शनों से सुख होता है।

भी बल जाऊं हस्त कमल की, बल जाऊं वस्तर।
लेऊं बलैयां भूखन की, बल जाऊं सीतल नजर।।११।।

मैं आपके हस्त कमल पर, वस्त्रों पर, आभूषणों पर, और शीतल नजर पर वारी-वारी जाती हूं।

वार डारूं मैं नासिका पर, और वार डारूं श्रवन।
वार डारूं मैं नख सिख पर, जो सनकूल हैं अति घन।।१२।।

मैं नासिका पर, कान पर तथा नख से शिख तक की शोभा पर बलिहारी जाती हूं। यह अत्यन्त ही सुन्दर है।

सेवा करत बाई हीरबाई, उछव रसोई जित।
अंतरगत तुम नित आरोगो, मैं बल बल जाऊं तित।।१३।।

हीरबाई (खेताभाई की पत्नी) जहां आपकी सेवा के लिए रसोई बनाती थी, जहां आप नित्य ही आरोगते थे, मैं उस स्थान पर बलिहारी जाती हूं।

Nijanand App

वार डारूं मैं वानी पर, जो वचन केहेत रसाल।
साथ को चरने राख के, सागर आड़ी बांधत हो पाल।। १४ ।।

हे धनी! आपके रस भरे वचनों की वाणी पर, जो सुन्दरसाथ को सुनाकर अपने चरणों में रखकर कृपा की, भवसागर से बचाने के लिए पाल (बंध) बांधते थे, उन पर मैं बलिहारी जाती हूं।

करत हो कृपा कई बिध की, मीठी अति मेहेरबानी।
सांचे लाड़ लड़ाए सुन्दर, ल्याए वतन की वानी।। १५ ।।

धनी परमधाम से तारतम वाणी को लाकर सुन्दरसाथ को तरह-तरह के लाड़ लड़ाते थे और फिर कई तरह की कृपा करते थे।

मैं सेवा करूं सर्वा अंगों, देऊं प्रदखिना रात दिन।
पल न वालूं निरखूं नेत्रे, आतम लगाए लगन।। १६ ।।

मैं सब अंगों से रात-दिन परिकरमा देकर आपकी सेवा करूं और आत्मा में लगन लगाकर लगातार नैनों से निहारती रहूं। एक पलक भी न झपकूं।

मुझसे अजान अबूझ दुष्ट अप्रीछक, अधम नीच मत हीन।
सो इन चरनो आए होए दाना स्याना, सुघड़ सुबुध प्रवीन।। १७ ।।

मुझ जैसा अज्ञानी, नासमझ, दुष्ट, अनजान, अधम, नीच, हीन मत वाला भी आपके चरणों में आकर बुद्धिमान, चतुर, सबुद्धि, सुघड़ और होशियार बन जाता है।

जीव जगाए देत निध निरमल, करत आतम रोसन।
सो जीव बुध ले करे उजाला, सबमें चौदे भवन।। १८ ।।

आप जीव को जगाकर अखण्ड न्यामत (तारतम वाणी) देते हो। आत्मा को जगाते हो। वह जीव आपके ज्ञान को लेकर चौदह लोकों में उजाला करता है।

इन जुबां क्यों कहूं बड़ाई, तुमें सब्द न पोहोंचे कोए।
जो कछू कहूं सो उरे रहे, ताथे दुख लागत है मोहे।। १९ ।।

इस जबान से मैं आपकी कैसे प्रशंसा करूं? यहां के शब्द आप तक कोई नहीं पहुंचते। जो कुछ कहती हूं वह यहीं रह जाता है, इसलिए मुझे बड़ा दुःख लगता है।

दाझ बुझत है एक सब्द में, जब कहूं धनी श्रीधाम।
इन वचनें आतम सुख पायो, भागी हैड़े की हाम।। २० ।।

मैं जब 'धाम-धनी' शब्द को कहती हूं तो मेरे हृदय की प्यास (तड़प) बुझ जाती है। इन वचनों से मेरी आत्मा को सुख होता है और हृदय की चाहना मिट जाती है।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोड़ ब्रह्मांड करूं रोसन।
सीधी राह देखाऊं जाहेर, ज्यों साथ सुखे आवे वतन।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि ब्रह्माण्ड को फोड़कर सुन्दरसाथ को सीधा रास्ता दिखाऊं, जिससे सुन्दरसाथ बड़े सुख के साथ घर (परमधाम) वापस आ जाएं।

Nijanand App